प्रतिदर्श प्रश्नपत्र - 1, 2021-22

द्वितीय सत्र

विषय- हिंदी 'ए' (कोड-002)

निर्धारित समय : 2 घंटे **पूर्णांक : 40**

सामान्य निर्देश :

- **इस प्रश्न पत्र में दो खंड हैं— खंड 'क' और खंड 'ख'**
- **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। यथासंभव सभी प्रश्नों के उत्तर क्रमानुसार ही लिखिए।**
- **लेखन कार्य में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखिए।**
- **खंड-'क' में कुल 3 प्रश्न हैं। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए इनके उपप्रश्नों के उत्तर दीजिए।**
- **खंड-'ख' में कुल 4 प्रश्न हैं। सभी प्रश्नों के साथ विकल्प दिए गए हैं। निर्देशानुसार विकल्प का ध्यान रखते हुए चारों प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

खण्ड–'क'

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में लिखिए— **[2 × 4 = 8]**

(क) 'पंखों पर सवार साँवले सपनों का हुजूम' किसे और क्यों कहा गया है? 'साँवले सपनों की याद' पाठ के आधार पर समझाकर बताइए।

(ख) सालिम अली के अनुसार लोगों का प्रकृति के प्रति क्या नजरिया है ? हमें प्रकृति को किस नजरिए से देखना चाहिए ?

(ग) प्रेमचंद की फोटो से उनके व्यक्तित्व के विषय में क्या बोध होता है? कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

(घ) कुंभनदास कौन थे ? उनका प्रसंग किस संदर्भ में दिया गया है ? समझाकर लिखिए।

2. निम्नलिखित में से किन्ही तीन प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में दीजिए— **[2 × 3 = 6]**

(क) 'मोहन के व्रत पर' पंक्ति का आशय 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर व्यक्त कीजिए तथा उन परिस्थितियों का भी उल्लेख कीजिए जिनमें यह व्रत धारण किया था।

(ख) कवि किन कष्टों में रातभर कहाँ जागता था और कोयल से वह क्या जानना चाहता था? 'कैदी और कोकिला' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ग) आपके विचार से बच्चों को काम पर क्यों नहीं भेजा जाना चाहिए ? उन्हें क्या करने के मौके मिलने चाहिए ?

(घ) काम पर जाने वाले बच्चे किन-किन सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं और क्यों? 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता के आधार पर लिखिए।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए— **[3 × 2 = 6]**

(क) लेखिका मृदुला गर्ग के बागलकोट में स्कूल खोलने के प्रयास का वर्णन कीजिए तथा बताइए कि आपको इससे क्या शिक्षा मिलती है?

(ख) एकांकी 'रीढ़ की हड्डी' पाठ के आधार पर रामस्वरूप एवं गोपाल प्रसाद में से आप किसे ज्यादा दोषी मानते हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(ग) माटी वाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का समय क्यों नहीं था?

खण्ड–'ख'

रचनात्मक लेखन—

4. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 150 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए— **[5]**

(क) नर हो, न निराश करो मन को

संकेत-बिन्दु—(i) सूक्ति का अर्थ, (ii) निराशा में डूबना शोभनीय नहीं, (iii) उपसंहार।

(ख) देश में बढ़ता भ्रष्टाचार

संकेत-बिन्दु—(i) भ्रष्टाचार व्यवस्था का अर्थ, (ii) भ्रष्टाचार का कारण और स्वरूप, (iii) समाधान।

(ग) एक सैनिक की आत्मकथा

संकेत-बिन्दु—(i) सैनिक की दिनचर्या, (ii) संघर्ष, (iii) चुनौतियाँ।

5. अपने नगर में व्याप्त बिजली कटौती से उत्पन्न समस्याओं का उल्लेख करते हुए किसी लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। **[5]**

अथवा

छोटी बहन को समय के सदुपयोग की सलाह देते हुए पत्र लिखिए।

6. (क) आपने अपना गृहकार्य नहीं किया है। इसका कारण बताते हुए शिक्षक के साथ होने वाला संवाद लिखिए। **[2½ × 2 = 5]**

अथवा

इंटरनेट के उपयोग को लेकर दो छात्रों के मध्य संवाद लिखिए।

(ख) गाँव से कुछ दूरी पर रेलगाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई है। दो मित्र वहाँ पीड़ितों की सहायता के लिए जाना चाहते हैं। उनके मध्य हुए संवाद का लेखन कीजिए।

अथवा

परीक्षा से एक दिन पूर्व दो मित्रों की बातचीत का संवाद लेखन कीजिए।

7. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में लघु कथा लिखिए— **[5]**

(क) महान कौन

(ख) सही बँटवारा

●●

उत्तरमाला

खण्ड–'क'

1. **(क)** 'पंखों पर सवार साँवले सपनों का हुजूम' पक्षी विज्ञानी सालिम अली के जनाजे को कहा गया है। उनका मृत शरीर मौत की खामोश वादी की ओर अग्रसर है। वे प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी थे और अब इस दुनिया से विदा ले रहे थे। अत: पक्षियों से सम्बन्धित सपने अब वे नहीं देख सकेंगे। **[2]**

(ख) लोगों का प्रकृति के प्रति उदासीन रवैया देखकर वे द्रवित हो गए। प्रकृति व हरियाली की रक्षा प्राणिमात्र के लिए अत्यंत आवश्यक है, अत: हमें अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रकृति का ध्यान रखने का प्रयास करना ही होगा। हमें प्रकृति को मनुष्य के नजरिए से न देखकर प्रकृति के नजरिए से ही देखना चाहिए। **[2]**

(ग) लेखक के अनुसार प्रेमचंद के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) **लापरवाह व्यक्ति**—प्रेमचंद पोशाकों के शौकीन नहीं थे। मोटे कपड़े की धोती, कुर्ता तथा टोपी पहनते थे। उनकी फोटो में वे पैरों में केनवस के जूते पहने हैं परन्तु फीते बेढंगे हैं तथा एक पाँव के जूते में छेद है।

(ii) **कष्टपूर्ण जीवन**—प्रेमचंद ने जीवन में अनेक कष्ट सहे। फोटो खिंचवाते समय भी मुस्कान बड़ी मुश्किल से आती थी।

(iii) **महान् व्यक्तित्व**—प्रेमचंद ने अपनी कथा तथा उपन्यासों से एक नये युग की शुरुआत की। उनको युग–प्रवर्तक कहा जाता है।

(iv) **अन्धविश्वासों के विरोधी**—प्रेमचंद सामाजिक विकास में बाधक परम्पराओं के विरोधी थे। वे कुरीतियों और रूढ़िवादी परम्पराओं रूपी टीलों को ठोकर मार कर उनका विरोध करते थे। **[2]**

(घ) कुंभनदास कृष्णभक्त कवि थे। एक बार सम्राट अकबर ने उन्हें फतेहपुर सीकरी बुलाकर पुरस्कार देने की बात की, तब उन्होंने इस पद की रचना की–

संतन कौं कहा सीकरी सौ काम।

आवत जात पन्हइयाँ घिस गईं बिसरि गयौ हरिनाम।।

प्रेमचंद के फटे जूते के संदर्भ में कुंभनदास के प्रसंग का उल्लेख किया गया है। प्रेमचंद रूढ़िवादी परम्पराओं को ठोकर मारते थे इसलिए उनके जूते फट गए, परन्तु समाज नहीं बदला। **[2]**

2. **(क)** 'मोहन के व्रत पर' का आशय मोहनदास करमचंद गाँधी के द्वारा किए गए आह्वान तथा आज़ादी की लड़ाई से है। देश को अंग्रेज़ों से आज़ाद कराने के लिए उन्होंने असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात किया और 'अंग्रेज़ो भारत छोड़ो' का नारा दिया। कवि भी उनके आह्वान पर नौकरी छोड़कर आज़ादी की लड़ाई में कूद पड़ा। **[2]**

(ख) कवि को कारागार में भरपेट भोजन नहीं मिलता था, कोल्हू में बैल की जगह जुतना पड़ता था, गालियाँ और अपमान मिलता था। इन कष्टों के कारण वह रात–रात भर जागता था। कवि कोयल से यह जानना चाहता है कि वह क्या संदेशा लाई है, उसकी कूक में वेदना का भाव क्यों है ? **[2]**

(ग) मेरे विचार में बच्चों को काम पर नहीं भेजा जाना चाहिए, उन्हें पढ़ने-लिखने का पूरा मौका मिलना चाहिए ताकि वे शिक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को संवार सकें। उन्हें खेलने-कूदने का उचित अवसर मिलना चाहिए ताकि वे तन-मन से स्वस्थ बन सकें। उन्हें अपने माता-पिता, सगे-सम्बन्धियों और आस-पड़ोस से पूरा प्रेम मिलना चाहिए। ऐसा होने से ही उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सकेगा। **[2]**

(घ) काम पर जाने वाले बच्चे शिक्षा प्राप्ति, खेलकूद और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित रह जाते हैं। बच्चों के सुविधा और मनोरंजन के उपकरणों से वंचित रहने का कारण है कि उनके माँ-बाप गरीब हैं। जब उनके पास पेट भरने के लिए रोटी ही नहीं है तो उनके पास उनके लिए खेल-खिलौने कहाँ से आ सकते हैं? इसलिए उनके बच्चे खेलने नहीं बल्कि काम करने के लिए जाते हैं। **[2]**

सामान्य त्रुटियाँ

- 'मोहन के व्रत पर' से आशय वे कृष्ण भगवान के व्रत, पूजा आदि लेते हैं जो कि गलत है।
- विद्यार्थी कवि के जेल में बंदी होने की वजह स्पष्ट नहीं कर पाते।

निवारण

- विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम में निर्धारित सभी कविताओं का अध्ययन कर उनका केन्द्रीय भाव समझना चाहिए।
- विद्यार्थियों को प्रश्नों के उत्तर अपनी भाषा में देने का प्रयास करना चाहिए।

3. (क) कर्नाटक जाने पर लेखिका मृदुला गर्ग ने बागलकोट कस्बे में एक प्राइमरी स्कूल खोलने की कैथोलिक बिशप से प्रार्थना की, परन्तु क्रिश्चियन जनसंख्या कम होने के कारण वे स्कूल खोलने में असमर्थ थे। लेखिका ने अनेक परिश्रमी और समृद्ध लोगों की मदद से वहाँ अंग्रेज़ी, कन्नड़ तथा हिंदी तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला स्कूल खोलकर उसे कर्नाटक सरकार से मान्यता भी दिलाई। लेखिका के इस कार्य से हमें यह शिक्षा मिलती है कि कठिन परिश्रम व दृढ़ इच्छा शक्ति से कोई भी कार्य सम्पन्न किया जा सकता है। **[3]**

(ख) गोपाल प्रसाद विवाह को 'बिजनेस' मानते हैं। जिस प्रकार व्यक्ति लाभ-हानि का विचार कर व्यापार करता है, उसी प्रकार वे भी अपने लड़के की शादी किसी अच्छी हैसियत वाले व्यक्ति की कम पढ़ी-लिखी लड़की से करना चाहते हैं। इसके पीछे उनकी यह सोच है कि लड़की बिना किसी नाज-नखरे के उनके घरेलू कामों में लगी रहे। इस प्रकार वे नारी को सम्मान नहीं देना चाहते, अत: वे अपराधी हैं।

रामस्वरूप द्वारा अपनी बेटी की उच्च शिक्षा को छिपाने का कारण यह है कि अधिक पढ़ी-लिखी होने के कारण उसके विवाह में कठिनाई आ रही है। पुरुष प्रधान समाज नारी की गरिमापूर्ण स्थिति को स्वीकार नहीं कर पा रहा है। अत: रामस्वरूप विवश होकर ऐसा कदम उठाते हैं। इस कारण गोपाल प्रसाद की तुलना में उनका अपराध हल्का है। **[3]**

(ग) जब जीवन पेट की समस्या से ग्रसित हो, रोटी की चिंता में रात-दिन एक समान लगे तब भाग्य की बात बहुत दूर चली जाती है। माटी वाली भी अपनी आर्थिक और पारिवारिक उलझनों में उलझी, निम्न स्तर का जीवन जीने वाली सामान्य-सी महिला थी। अपना तथा अपने पति का पेट पालना ही उसकी सबसे बड़ी समस्या थी। सुबह उठकर माटाखाना जाना और दिनभर उस मिट्टी को बेचना। इसी में उसका सारा समय बीत जाता था। अपनी इसी दिनचर्या को वह नियति मानकर चले जा रही थी। इस विषम परिस्थिति में माटी वाली के पास अच्छे और बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का समय नहीं रहता था। **[3]**

सामान्य त्रुटियाँ

- विद्यार्थी प्रश्न के उत्तर में मुख्य बिन्दुओं पर ध्यान नहीं देते तथा अत्यधिक विस्तार से उत्तर लिखते हैं।
- विद्यार्थी भाषा, वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ अधिक करते हैं।

निवारण

- विद्यार्थियों को पाठ का अध्ययन ध्यानपूर्वक करना चाहिए ताकि प्रश्नों के उत्तर सुचारु रूप से दे सकें।
- भाषा संबंधी त्रुटियों को दूर करने का प्रयास निरन्तर करते रहना चाहिए।

खण्ड–'ख'

4. (क) नर हो, न निराश करो मन को

'नर हो, न निराश करो मन को' सूक्ति का अर्थ है कि मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। यदि मनुष्य ठान ले तो इस संसार में कुछ भी असम्भव नहीं है। हमें हमेशा अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। मनुष्य की समस्त इन्द्रियों का संचालक मन ही है। मन के द्वारा ही मनुष्य साधनहीन होने पर भी हार को जीत में बदल सकता है, जबकि यदि मन में दुर्बलता हो तो सभी साधनों के होते हुए भी मनुष्य पराजय का मुख देखता है। इसलिए कभी भी निराशा को अपने पास नहीं फटकने देना चाहिए। सभी विद्वानों एवं ऋषि-मुनियों ने मन को संयमित एवं बलवान बनाने पर बल दिया है। संयमित मन ही दृढ़ संकल्प ले सकता है। निराशा में डूबा मनुष्य कोई भी निर्णय नहीं ले सकता। यदि एक बार मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका तो उसे अपना प्रयत्न जारी रखना चाहिए। जीवन सफलता-असफलता, लाभ-हानि, जय-पराजय का ही दूसरा रूप है। इतिहास यह सिद्ध करता है कि जब-जब मनुष्य ने निराशा का दामन थामा है तब-तब प्रगति एवं विकास का रथ थम गया है। इसलिए हमेशा अपने लक्ष्य के प्रति आशावान होना चाहिए। मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

(ख) देश में बढ़ता भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार का तात्पर्य है– भ्रष्ट व्यवहार या अनैतिक व्यवहार। दुर्भाग्य से आज सारे भारतवर्ष में भ्रष्टाचार व्याप्त है। सरकारी कार्यालयों में तो काम तभी हो पाता है जब उन्हें घूस मिल जाती है। न्याय प्रणाली भी भ्रष्टाचार की लपेट में आ गयी है। यदि हम भ्रष्टाचार के मूल में जाएँ तो उसका मूल कारण मानव का स्वार्थ, उसकी लिप्सा तथा धन लोलुपता दिखाई देती है। आज प्रत्येक व्यक्ति उचित तथा अनुचित साधनों द्वारा धन प्राप्त करने में लगा दिखाई देता है। मनुष्य की बढ़ती हुई आवश्यकताएँ तथा उन्हें पूरा करने के लिए अपनाए जा रहे साधन, अनियंत्रित होती महँगाई तथा अमीर-गरीब के बीच का बढ़ता अंतर ही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। यदि हम भ्रष्टाचार को समाप्त करना चाहते हैं तो हमें प्रत्येक व्यक्ति के मनोबल को ऊँचा उठाना होगा। यदि भ्रष्ट राजनेता अपने आचरण को सुधार लें तो भ्रष्टाचार को जड़ से समाप्त किया जा सकता है। साथ ही हमें न्यायिक व्यवस्था को मजबूत बनाना होगा। नई तकनीक भी भ्रष्टाचार को समाप्त करने में अपना योगदान दे सकती है।

(ग) एक सैनिक की आत्मकथा

मैं भारतीय सेना का एक सैनिक हूँ। मेरा नाम करतार सिंह है। मैं मथुरा जनपद के बल्देव कस्बे का रहने वाला हूँ तथा मधुबन (करनाल) के सैनिक स्कूल में पढ़ा हूँ। स्कूल के समय से ही मैंने सैनिक अनुशासन व कठोर दिनचर्या का पालन किया है। देश की पर्वतीय सीमा पर हमें बड़ी विषम परिस्थितियों में जीवन बिताना पड़ता है। सर्दी में जब तापमान शून्य से भी नीचे चला जाता है तब भी हम पूरी सजगता और निष्ठा से देश की सीमा की सुरक्षा में लगे रहते हैं। देशवासी चैन की नींद सो सकें, इसके लिए हम रातों में जागकर पहरा देते हैं। घुसपैठियों व आतंकवादियों से जूझते हुए हम हमेशा अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार रहते हैं। इस प्रकार से ड्यूटी के दौरान मैंने लेह के बर्फ़ीले इलाकों का आनन्द भी लिया और जैसलमेर की तपती बालू का भी। हम सैनिकों की जिन्दगी में प्रतिदिन कोई न कोई नई चुनौती हमारे सामने होती हैं। हमारी किसी साँस का कोई भरोसा नहीं होता। मौत हर दम हमारे सामने नाचती रहती है किन्तु मस्ती हमारा साथ नहीं छोड़ती। **[5]**

सामान्य त्रुटियाँ

- अनुच्छेद हेतु दिए गए विषयों का चुनाव विद्यार्थी अपनी लेखन और ज्ञान-क्षमता के अनुसार नहीं करते हैं।
- अनुच्छेद के विषय में विद्यार्थी संकेत बिन्दु को देखे बिना ही अनुच्छेद लिख देते हैं तथा शब्द-सीमा का भी ध्यान नहीं रखते।

निवारण

- विद्यार्थियों को विषय का चुनाव अपने लेखन और ज्ञान-क्षमता के आधार पर करना चाहिए।
- विषय में संकेत-बिन्दु को ध्यानपूर्वक पढ़कर अनुच्छेद लिखना चाहिए और शब्द सीमा का ध्यान रखना चाहिए।

5. सेवा में,

मुख्य संपादक महोदय,

अ.ब.स. समाचार-पत्र,

अ.ब.स. नगर।

दिनांक: 03 अप्रैल, 20XX

विषय—बिजली की कटौती से उत्पन्न समस्याओं के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने इलाके में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों की ओर दिलाना चाहता हूँ। आजकल हमारी सी.बी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षाएँ चल रही हैं। ऐसी स्थिति में बार-बार बिजली चले जाने से हम छात्रों को पढ़ाई करने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बिजली की इस आँख-मिचौली से हम छात्रों की पढ़ाई में व्यवधान पड़ता है। इसका हमारे परीक्षा-परिणाम पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। बिजली जाने का कोई निश्चित समय भी नहीं है, जब भी हम छात्रों के पढ़ने का समय होता है तो बिजली चली जाती है।

आपसे अनुरोध है कि हम छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए इस समाचार को अपने लोकप्रिय समाचार-पत्र के मुख पृष्ठ पर जगह देकर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट करने की कृपा करें जिससे हमारी समस्या शीघ्र दूर हो सके।

इसके लिए हम सब आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय,

अ.ब.स.

अ.ब.स. मोहल्ला

अ.ब.स. नगर। **[5]**

अथवा

परीक्षा भवन,

क ख ग नगर,

16.7.20.....

प्रिय नेहा,

ढेर सारा प्यार!

आशा है तुम सकुशल होगी। छात्रावास में भी तुम्हारा मन लग गया होगा। अब तक तुम्हारी दिनचर्या भी नियमित हो गई होगी। प्रिय नेहा, तुम सौभाग्यशाली हो कि तुमने एक अच्छे विद्यालय व छात्रावास में प्रवेश लिया है। तुम्हें स्वतंत्र रहकर अपना जीवन स्वयं बनाना है। बड़ी बहन होने के नाते मैं तुम्हें यह कहना चाहती हूँ कि वहाँ रहकर तुम समय का सदुपयोग करना। ऐसी दिनचर्या बनाना जिसमें अपने अध्ययन को अधिक समय दे सको। तुम्हें पता है, समय और लहरें किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं। यदि हम दिनचर्या का पालन नहीं करेंगे तो पछताने का भी अवसर नहीं मिलेगा। निष्ठापूर्वक पालन करने से ऐसा हो नहीं सकता कि सफलता न मिले, इसलिए वर्ष का एक-एक दिन अध्ययन में लगाना। मम्मी और पापा की ओर से आशीर्वाद।

तुम्हारी बहन,

प्रीति।

6. **(क)** **शिक्षक** : (छात्र की ओर संकेत करते हुए) रमन! अपना गृहकार्य दिखाओ।

रमन : (डरते हुए) श्रीमान्! आज मैं गृहकार्य करके नहीं ला सका।

शिक्षक : क्यों?

रमन : कल मेरी माताजी की तबियत अचानक खराब हो गई थी जिसके कारण मैं अपना गृहकार्य पूरा नहीं कर पाया।

शिक्षक : क्या तुम सच बोल रहे हो?

रमन : हाँ सर! मैं बिल्कुल सच कह रहा हूँ।

शिक्षक : कोई बात नहीं। अब कैसी तबियत है माँ की?

रमन : पहले से बहुत सुधार है।

शिक्षक : ठीक है कल, आज और कल दोनों दिन का गृहकार्य पूरा करके अवश्य लाना।

रमन : जी श्रीमान्! कल अवश्य दिखा दूँगा। धन्यवाद!

अथवा

मोहन : क्या तुमने कल का गृहकार्य पूरा कर लिया ? तुमने किससे सहायता ली ?

सोहन : हाँ, मैंने इंटरनेट से सहायता ली।

मोहन : मित्र! यह क्या होता है ?

सोहन : इंटरनेट पर सभी विषयों के बारे में जानकारी उपलब्ध होती है।

मोहन : तुम्हें किसने बताया ?

सोहन : कल जब मैंने अपने बड़े भाई से सहायता माँगी तो उन्होंने मुझे इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री के बारे में बताया।

मोहन : अच्छा! यह तो बड़ी अच्छी बात है।

सोहन : मित्र! अब हम अपना कार्य आसानी से कर सकेंगे।

मोहन : इंटरनेट पर हम और क्या-क्या कर सकते हैं ?

सोहन : इंटरनेट पर हम बैंकिंग, टिकिटिंग, शॉपिंग आदि अनेक कार्य घर बैठे कर सकते हैं।

मोहन : अरे वाह ! फिर तो मैं भी इंटरनेट से सहायता जरूर लूँगा। धन्यवाद मित्र ! इतनी उपयोगी जानकारी देने के लिए। **[2½]**

(ख) अर्णव : नमस्ते संजय! घबराए हुए कहाँ से भागे आ रहे हो।

संजय : नमस्ते अर्णव! तुमने सुना नहीं शायद, रेलगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए हैं।

अर्णव : क्या जान-माल की ज्यादा क्षति हुई है?

संजय : हाँ, दो डिब्बे पटरी से उतरकर आपस में टकरा गए हैं।

अर्णव : पर, अब तुम कहाँ जा रहे हो?

संजय : मैं गाँववालों को खबर करने जा रहा हूँ।

अर्णव : मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ। मैं लोगों से कहूँगा कि यात्रियों के लिए कुछ आवश्यक सामान भी ले चलें।

संजय : यह ठीक रहेगा।

अर्णव : मैं गोपी चाचा से कहता हूँ कि वे अपनी जीप से सबको ले चलें। उनकी जीप से घायलों को अस्पताल तक पहुँचाया जा सकता है।

संजय : डॉ. रमेश अंकल को भी साथ ले चलना। वे घायलों की प्राथमिक चिकित्सा कर सकेंगे।

अर्णव : तुम्हारा यह सुझाव बहुत अच्छा है।

संजय : चलो, सबको लेकर वहाँ जल्दी से पहुँचते हैं। **[2½]**

अथवा

आकाश : नमस्ते रमन, कुछ परेशान से दिखते हो?

रमन : नमस्ते आकाश, कल हमारी गणित की परीक्षा है।

आकाश : मैंने तो पूरा पाठ्यक्रम दोहरा लिया है, और तुमने?

रमन : पाठ्यक्रम तो मैंने भी दोहरा लिया है, पर कई सवाल ऐसे हैं, जो मुझे नहीं आ रहे हैं।

आकाश : ऐसा क्यों?

रमन : जब वे सवाल समझाए गए थे, तब बीमारी के कारण मैं स्कूल नहीं जा सका था।

आकाश : कोई बात नहीं चलो, मैं तुम्हें समझा देता हूँ। शायद तुम्हारी समस्या हल हो जाए।

रमन : पर इससे तो तुम्हारा समय बेकार जाएगा।

आकाश : कैसी बातें करते हो यार, अरे! तुम्हें पढ़ाते हुए मेरा दोहराने का काम स्वत: हो जाएगा। फिर, इतने दिनों की मित्रता कब काम आएगी।

रमन : पर, मैं उस अध्याय के सूत्र रट नहीं पा रहा हूँ।

आकाश : सूत्र रटने की चीज़ नहीं, समझने की बात है। एक बार यह तो समझो कि सूत्र बना कैसे। फिर सवाल कितना भी घुमा-फिराकर आए तुम जरूर हल कर लोगे।

रमन : तुमने तो मेरी समस्या ही सुलझा दी। चलो अब कुछ समझा भी दो।

7. (क) **महान कौन**

एक बार विक्रम सेन नाम के एक महाप्रतापी राजा थे। वह सदैव अपनी प्रजा के कल्याण के कार्यों में लगे रहते थे। एक बार उन्हें पता चला कि पास के जंगल में एक ऋषि अनेक वर्षों से लोहे का एक डंडा ज़मीन में गाड़कर तपस्या कर रहे हैं और उनके तप के प्रभाव से डंडे में कुछ अंकुर फूट गए हैं व फूल-पत्ते निकल रहे हैं। जब वह अपनी तपस्या पूर्ण कर लेंगे तो उनका डंडा फूल-पत्तों से भर जाएगा। राजा विक्रमसेन ने सोचा कि मैं भी तप करूँ और अपना जीवन सार्थक बनाऊँ। यह निश्चय कर वे जंगल गए और ऋषि के पास लोहे का डंडा गाड़कर तपस्या करने लगे। संयोगवश उसी रात जोर का तूफान आया। मूसलाधार बारिश होने लगी। राजा और ऋषि मौसम की परवाह न करके तपस्या में लगे रहे। तभी एक व्यक्ति बुरी तरह भीगा हुआ तथा ठंड से कांपता हुआ आया। उसने ऋषि से कहीं ठहरने की जगह के बारे में पूछा लेकिन ऋषि ने आँखें खोलकर भी नहीं देखा। निराश होकर वह लड़खडाता हुआ राजा विक्रमसेन के पास पहुँचा और बेहोश होकर गिर पड़ा। राजा उस व्यक्ति की ऐसी खराब हालत देख तुरन्त उठ खड़े हुए और उसे गोद में उठाकर चल दिए। थोड़ी ही दूरी पर उन्हें एक कुटिया दिखाई दी। राजा ने कुटिया में उस व्यक्ति को लिटाया और उसके पास आग जलाकर गर्माहट पैदा की। राजा उसके हाथ-पैरों की मालिश करते रहे। सुबह तक उस आदमी की हालत में काफी सुधार आ गया। जब राजा और व्यक्ति वापस आए तो राजा यह देखकर हैरान रह गया कि उसके द्वारा गाड़ा गया लोहे का डंडा ताजे फूल-पत्तों से भरकर झुक गया है वहीं ऋषि के डंडे में जो थोड़े-बहुत फूल-पत्ते निकले थे वे भी मुरझा गए हैं। तब राजा समझ गया कि मानव सेवा से बड़ी तपस्या कोई नहीं है। वह अपने राज्य वापस आकर प्रजा की देखभाल करने लगा। **[2½]**

(ख) **सही बँटवारा**

एक बार एक औरत थी— मीरा। उसके दो बेटे थे। दोनों बेटों की उम्र में एक साल का ही अंतर था। कद-काठी में देखने से दोनों जुडवाँ लगते थे। उन दोनों को सुबह के नाश्ते में ब्रेड खाना पसंद था इसलिए मीरा एक दिन पहले शाम को ही ब्रेड मँगा लेती थी। चूँकि ब्रेड की दुकान घर से कुछ दूर थी अत: उन्हें लाने की जिम्मेदारी उसके दोनों बेटों की थी। लेकिन ब्रेड लेने कौन जाए—इस बात पर दोनों बेटों में झगड़ा होता था क्योंकि मीरा दोनों को बराबर ब्रेड देती थी इसलिए ब्रेड़ लाने वाले को कोई फायदा न होने से उनमें विवाद होता। रोज के विवाद से तंग आकर मीरा ने कहा कि जो ब्रेड का पैकेट दुकान से लाएगा उसे एक ब्रेड अधिक मिलेगी। अब दोनों भाइयों में ब्रेड अधिक पाने के लालच के कारण फिर विवाद होने लगा। वे दोनों ही बाज़ार से ब्रेड़ लाना चाहते थे। मीरा ने अपनी परेशानी अपनी सहेली को बताई तो वह बोली कि गलत बँटवारा ही विवाद की जड़ है। बँटवारा फायदे का नहीं ज़िम्मेदारियों का होना चाहिए। अधिक लाभ पाने के इरादे से ज्यादा ज़िम्मेदारी निभाने की इच्छा परिवार के लिए ही नहीं, देश के लिए भी घातक है। लोग बड़े पद की चाह भी ज्यादा लाभ के लिए करते हैं अधिक ज़िम्मेदारियाँ निभाने के लिए नहीं। सहेली की बात मीरा समझ गई। उसने दोनों बेटों को बारी-बारी से ब्रेड लाने की ज़िम्मेदारी दी और दोनों को बराबर ब्रेड देना तय किया। इस तरह विवाद समाप्त हो गया। **[2½]**

●●